निराला के काव्य में चित्रित भारतीयता के बिंब

प्रा. लक्ष्मण किसनराव पेटकुले हिंदी विभाग प्रमुख एस. एन. मोर महाविद्यालय, तुमसर, जि. भंडारा मो. नं. 9921414298 ई–मेल lkpetkule1980@gmail.com

भारत प्राचीन काल से लेकर आज तक संपूर्ण दुनियाँ में उसकी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर के कारण जाना जाता है। प्राचीन और मध्यकाल में मिले इस विरासत को शक, हुन, मुगल, डच, फ्रेंच और अंग्रेजों ने इसे मिटाने का भरस्सक प्रयास किया। परंतु भारतीय संतों ने समाज सुधारकों ने और क्रांतिकारियों ने उसका उतने ही प्रखरता से विरोध किया। अतः उन्हें चिर काल तक इस धरती पर टिकने नहीं दिया। इतिहास साक्ष्य है।

भारतीय साहित्य की विपुल परंपरा रही है। जिसमें संस्कृत, पाली, मलियालम, तेलगु, बंगाली, हिंदी आदि भाषाओं में लिखा गया साहित्य आज भी सिर्फ भारत को ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व को प्रेरणा दे रहा है। संत कबीर, तुलसी, सूरदास, जायसी, संत तुकाराम, संत नामदेव, गुरु गोविंद सिंह, बसवेश्वर आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता केंद्र में रखकर अपने साहित्य में भारतीयता के बिंबो को बोया है। वही बिंब आज प्रफुल्लित होकर विश्व को मार्गदर्शन करते नजर आता हैं। इन्हीं में से एक रचनाकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जो अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस पर राज किया है। उनके समग्र साहित्य में भारतीयता के बिंब चारों ओर दिखाई पड़ते हैं। भारतीयता क्या है? उसका आधार क्या है? और किस प्रकार 'निराला' के साहित्य में भारतीयता के बिंब परिलक्षित होते हैं। इसका मंथन निम्नलिखित रूप में किया गया है।

भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है। या भारतीय तत्वों की झलक हो या जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीय होने का मतलब है भारत भूमि में रहने की जीवन व्यवस्था में शामिल होना। स्वामी विवेकानंद कहते हैं की, ''भारत जब तक जग में होगा भारतीयता तब तक होगी।''[1] तथा ''भारतीयता आध्यात्मिकता की तरंगों से ओत–प्रोत है।''[2] उसी तरह राधाकमल मुखर्जी भारतीयता पर अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''सामाजिक, नैतिक तथा कलात्मक क्षेत्रों को भारतीयता तत्व दर्शनपर सत्य और मूल्य प्रदान करती है।''[3]

भारतीयता का सर्वसाधारण अर्थ यही निकल जा सकता है भारतीय तत्वों में ही भारतीयता के बिंब देखें जा सकते हैं। जैसे भारतीय संस्कृति, भारतीय गीत–संगीत, लोककथा, लोक परंपरा तथा मानवतावादी दृष्टि, सत्य, अहिंसा, संहिष्णुता, समर्पण, परोपकार, वीरता, समानता, आदर, सत्कार, 'अतिथी देवो भव' आदि बिंदु भारतीय संस्कृति में पाये जाते हैं। जो भारतीय लोक इसी तत्वों को अपना जीवन मानकर इन आदर्शों को लेकर अपना जीवन जीते हैं।

''बिंब शब्द वस्तुतः अंग्रेजी के ''इमेज'' शब्द का रूपांतरण है ''इमेज'' का कोषगत का अर्थ है – मानसिक चित्र या विचार, उपमा, रूपक, चित्र मूर्ति, बिंब, प्रतिबिंब, प्रतिरूप।''[4]

चेम्बर्स ट्वेंटी सेन्चुरी डिक्शनरी में ''इमेज'' को कल्पना या स्मृति में निर्मित एक ऐसी प्रतिकृति माना गया है, जिसके लिए दृश्य होना आवश्यक नहीं।[5]

उपरोक्त दिए गए अर्थों से ज्ञात होता है कि रचनाकारों के विचारों का प्रतिबिंब उसके साहित्य कृति में दिखाई देना ही बिंब कहलाता है। भारतीयता के बिंब निराला के काव्य में परिलक्षित होते हैं जो निम्न प्रकार से हैं।

भारतीय संस्कृति : भारतीय संस्कृति में स्त्री को अन्य साधारण महत्व है स्त्री को यदि आदि शक्ति कहा गया है। भारतीय साहित्य में स्त्री का महिमा मंडन किया गया है। निराला ने भी अपनी कविता में आदि शक्ति की महिमा का बखान करते हुए कहते है –

कोटि–कोटि सूर्य–चंद्र–तारा–ग्रह
कोटि इन्द्र सुरासूर –
जड़ चेतना मिले हुए जीव जग
बनते पलते हैं – नष्ट होते हैं। अंत में –
सारे ब्रह्माण्ड के मूल में विराजित है
आदि शक्ति रूपिणी,
शक्ति से जिनकी शक्तिशालिओं में सत्ता है,
माता है मेरी वे..... आदि।[6]

भारत में अनेक त्यौहार–पर्व है जिसके अवसर पर माँ दुर्गा, भवानी, कालिमाता, आदि को स्त्री का रूप मानकर उसकी पूजा–अर्चना की गई है। जो हमारी भारतीय प्राचीन संस्कृति का हिस्सा है।

डॉ. मदन गोपाल गुप्त के शब्दों में ''पर्वोत्सव किसी भी समाज की सांस्कृतिक निधि हुआ करते हैं तथा देश और समाजगत विशेषताओं के अनुसार जन–जीवन के बीच विशेष प्रकार से प्रचलित होकर देश के निजी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हैं। भारत वर्ष में अनेक पर्वोत्सव है जिन्हें यहाँ का समाज चिर काल से मनाता चला आ रहा है और उनके माध्यम से यहाँ की सनातन संस्कृति की एकता को प्रतिष्ठित कर सका है।''[7]

समर्पण भावना :

समर्पण में त्याग की भावना है। किसी को अपने प्रभाव से, अपनी समर्पित भावना से पा सकते हैं। राम की शक्ति पूजा में राम की समर्पित भावना को अभिव्यक्त किया गया है। समर्पण हम भारतियों की सदियोंसे भावना रही है। 'राम की शक्ति पूजा' में निराला राम को देवी के चरणों में समर्पित होते हुए दिखाया गया है। उदा :

'माता, दशभूजा विश्व–ज्योति हूँ आश्रित;
हो विध्द शक्ति से है महि ाासुर खल मर्दीत;
जन–रंजन–चरण कमल–तल, धन्य सिंह गर्जित;
यह मेरा प्रतीक मातः समझा इंगित;
मैं सिंह इसी भाव
से करूंगा अभिनंदन।[8]

अर्थात श्री रामने मन ही मन में कहा कि माँ मैं आपका संकेत समझ गया हूँ अतः अब मैं इसि सिंह भाव से आपकी आराधना करूंगा। जैसे यह आपके पद–तल पर है वैसे मैं भी आपके चरणों की शरण में रहूंगा।

परोपकार :

'निराला' के काव्य में परोपकार की भावना दृष्टिगत होती है। भारत सदा से ही परोपकार की भावना को सीने से लगाए हुए है। यही भारतीय भावना निराला के मन भी है। 'दूरित से त्राण' की प्रार्थना करते समय कवि के सम्मुख राष्ट्र ही न होकर समस्त जगत् रहता है

''सार्थक करो प्राण।
जननी दुख–अवनि को
दुरित से दो त्राण।''[9]

मानवतावादी :

निराला जी छायावादी और प्रगतिवादी कवि के रूप में जाने जाते हैं। सौंदर्य चेतना के साथ–साथ इनके काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का चित्रण हुआ है। वास्तव में उनकी प्रगतिशील भावना सामाजिक और राष्ट्रीय होते हुए भी अंततः मानवतावाद में परिवर्तित होती है। एक सुख विश्व का रूप जिसमें समस्त मनुष्य जाति स्नेह और मानवता के रेशिम

पाश बंधे हों, जहाँ ईर्ष्या, द्वेष, ऊंच–नीच आदि के भेद–भाव समाप्त हो। निराला मानव समाज के उन्नति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

दलित जन पर करो करुणा।
दीनता पर उतर आये
प्रभु तुम्हारी शक्ति करूणा।[10]

संवेदनशीलता :

भारतीय नागरिक मूल रूप में संवेदनशील कहा जाता है। संवेदनशीलता का अर्थ दूसरों की वेदना को स्वयं महसूस करना। निराला क्रांतिकारी विचारों के साथ–साथ एक संवेदनशील व्यक्ति थे। वह दूसरों की वेदना को अपनी वेदना मानते थे। उनकी 'तोड़ती पत्थर' कविता में एक ऐसी दीन–हीन महिला का चित्रण हुआ है जो लुहूलुहाति धूप में पसीने से तर होकर पत्थर तोड़ने का काम कर रही स्त्री का चित्रण किया है।

''चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमा रूप,
उठी झूलसती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू
गंदे चिनगारी छा गई;
प्रयः हुई दोपहर
वह तोड़ती पत्थर''[11]

वीरता :

जहाँ एक ओर भारत मानवतावादी, संहिष्णु, परोपकारी अहिंसा का पुजारी है वहीं दूसरी ओर वह समय आनेपर अपने आप को इस देश के लिए स्वयं की बलि भी चढ़ा सकता है। हमारे देश में राजपूत, मराठा, सीख ऐसी कई लोग है जो इस मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। निराला अपने काव्य में सिखों की वीरता को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं कि –

समर में अमर कर प्राण,
गाण गाये महासिंधु–से,
सिंधु नद तीरवासी!...
''सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊंगा,
गोविंद सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा।''[12]

भाषा :

किसी भी देश की संस्कृति को जीवित रखना है तो उस देश की भाषा और सभ्यता जीवित रहनी चाहिए। देश के हर एक नागरिक को अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। निराला के काव्य में देखा जा सकता है कि निराला को अपनी भाषा एवं संस्कृति से प्रेम था। वे यहाँ अपनी भाषा की महत्ता के साथ गौरवगान करते नजर आते हैं।

''बन्दूँ पर सुंदर तत्व,
छंद नवल स्वर गौरव,
जननि नजक–जनति–जननि,
जन्मभूमि–भाशे।
जागो नव अंबर–भर
ज्योतिस्तर–वासे।''[13]

समारोह :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निराला के समग्र साहित्य में भारतीयता के पुट यत्र–तत्र दिखाई देते है। वे छायावादी, प्रगतिवादी और क्रांतिकारी कवि होने के बावजूद उनके काव्य में भारतीय संस्कृति के साथ–साथ सहज मानवीयता की भावना परिलक्षित होती है। 'विविधता में एकता' हम भारतीयों की पहचान है। जो भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है। यही सार 'निराला' के साहित्य में निकलता है। जो आज भी नये लेखकों को नई प्रेरणा तथा मार्गदर्शन करता है।

संदर्भ :

१. https://hi.m.wikipedia.org>Wiki – स्वामी विवेकानंद
२. https://hi.m.wikipedia.org>Wiki – स्वामी विवेकानंद
३. https://hi.m.wikipedia.org>Wiki – राधाकमल मुखर्जी
4. आठवें दशक के हिन्दी नाटको में बिंब विधान का अनुशीलन : डॉ. शिवदयाल पटेल, संकल्प प्रकाशन 1569/14, नौबस्ता, कानपुर, पृ. 1
5. आठवें दशक के हिन्दी नाटको में बिंब विधान का अनुशीलन : डॉ. शिवदयाल पटेल, संकल्प प्रकाशन 1569/14, नौबस्ता, कानपुर, पृ. 1
6. निराला का परवर्ती कार्य, रमेश चंद्र मेहरा : अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, पृ. 218
7. मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतिय संस्कृति : डॉ. मदनगोपाल गुप्त, पृ. 496
8. राम की शक्ति पूजा (महाकाव्य) का वस्तु विन्यास,..... डॉ. गोपाल नारायण श्रीवास्तव
9. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना : रविंद्रनाथ दरगन, वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली, पृ. 141
10. निराला का परवर्ती कार्य, रमेश चंद्र मेहरा : अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, पृ. 138
11. निराला का परवर्ती कार्य, रमेश चंद्र मेहरा : अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, पृ. 71
12. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना : रविंद्रनाथ दरगन, वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली, पृ. 119
13. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना : रविंद्रनाथ दरगन, वाणी प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली, पृ. 130